अहंकार की कांट समाज की फांस ।।

आचरण और आन्तरिक चिन्तन व्यकितत्व का प्रकाशपुंज होता है। यही व्यक्ति को निर्भीक शक्तिशाली मानवतावादी और परमार्थी बनाता है तथा मन वचन और कर्म को उच्चता प्रदान कर देवत्व के करीब ला खडा कर देता है । सद्भाव से आदमियत गौरान्वित होती है ।दूसरी ओर अहंकार का भाव जीवन को अभिशापित कर देता है । मैं ही बडा हूं । मैं ही श्रेप्ठ हूं । मेरे बिना देश और दीनहीन समाज का उध्दार नही हो सकता ।आदमी घमण्ड के बशीभूत होकर शोपण उत्पीडन पर उतारू हो जाता है । अपने लोगो का हित अपना हितएअपने इर्द गिर्द घुमने वालो और अपने सगे सम्बन्धियों को विशेप रियायत । दूसरें लोगो और कमजोर के शोपण,जुल्म और दमन आदि व्यवहार आदमी के व्यक्तित्व के पतन का पतन का परिचायक होता है ।अहंकार से व्यवहार और आत्मा की पवित्रता का भी विनाश हो जाता है ।अभिमान की कांट समानता की फांस देश और समाज दोनो के लिये हानिकारक है । विपरीत समय आने पर अभिमान काम नही आता है ।चाहे व्यक्ति कितने ही बडे ओहदे पर क्यों ना आसीन हो अथवा कितनो ही बडी जातीय श्रेप्ठता न हो ।वह अपने लोगो का कितना ही भला क्यों न किया हो शोपितो उपेक्षितो के साथ अन्याय कर । वास्तव में दीनहीन गरीबों के साथ अन्याय और अपना अथवा अपनों का भला अपराध है । जिस अपराध से व्यक्ति कभी भी नही बच सकता । इतिहास गवाह है अभिमान विनाश का सूचक साबित हुआ है । आज के विज्ञान के युग में भी अभिमान की वजह से कमजोर गरीब, सामाजिक पिछडो,कमजोर वर्ग के उच्चशिक्षितों का शोपण,जुल्म और अपने लोगो को विशेप सुविधा विशेप रियायत तक दी जा रही है । पद प्रतिप्ठा के अहंकार की वजह से व्यक्ति अपनों को आबाद और दीनहीनों को तबाह कर चैन कभी नही पा सकता । उसे अहंकार के शोले से जलाकर राख कर देगे । जब हिटलर जैसा व्यक्ति नही बच सका तो पद दौलत और जातीय श्रेप्ठता का अभिमान कहां बचा सकता है ।पौराणिक कथाओं के अनुसार रावण ,कंस और भी बहुत अभिमानी अंहकार के शिकार हुए जिसकी वजह से उनका नाम इतिहास के काले अक्षरों में लिखा गया हैं । जिनके नाम पर आज भी दुनिया थूकती है ।

कुछ श्रेप्ठता प्राप्त अहंकारी लोग अपनी तरक्की के रास्ते में आने वाले शख्स को उखाड फेंकना चाह रहे हैं और स्वार्थबस अपने से बडे अभिमानी की चरणवन्दना करने से भी नही चूकते । इसके लिये वे हर हथकण्डे अपनाते है और अपने मतलब की पूर्ति के लिये कुछ भी करने को तैयार रहते है । व्यक्ति यह जानता है कि अहंकार,छल,प्रपंच,शोपण,जुल्म आदि अमानवीय व्यवहार जीवन यात्रा के आधार नही है । इसके बाद भी वह दीनहीन सज्जन उच्च कद वाले व्यक्तिओं का दमन कर खुद को श्रेप्ठता के सिंहासन पर प्रतिप्ठित करने की अंधी दौड में है ।

बुरे वक्त में जब अहंकार की धूप हट जाती है तब उसे भान होता है कि जो उसने दमन किया है वह फलदायी नही है । विनाश होने अथवा विनाश की कंगार पर पहुंचने पर अहंकारी व्यक्ति को भान होता है कि उसका अहंकारी भाव जिसकी बदौलत वह दीनहीनों का शोपण किया वही वास्तव में उसका दुश्मन है ।हमें गरीबों दीनहीनों के कल्याण का कार्य करना चाहिये था परन्तु जब वह कल्याण के कार्य करने का सामर्थ्य रखता था तब तक तो वह स्वार्थ के लिये दमन पर उतरा हुआ था ।उसके विचार से अहंकारी दम्भी पाखण्डी और श्रेप्ठता के नाम पर कमजोर के अरमानों का दहन और उनके हको पर कब्जा उसके जीवन का आधार था । समय के करवट बदलते ही लाचार हो जाता है । आदमियत विरोधी भाव ताज्य हो जाता है । वे मुखौटा बदलने में जुट तो जाता है पर उनके घिनौना पूर्व के मुखौटे के छवि धूमिल नही होती ।वर्तमान समय में कुछ लोग सफल शासक बनने के लिये क्रूरता का सहारा ले रहे है । वैभवशाली ढंग से जीवन के लिये लूटखसोट,भ्रप्टाचार, अहंकार दम्भ पाखण्ड, दिखावा और श्रेप्ठता के नंगे प्रदर्शन को जरूरी मानने लगे है । वास्तव में ऐसे लोग श्रेप्ठता के पात्र नही घृणा के पात्र बनने की इबारते लिखते हैं भले ही वे पद पर रहते कितनो की झूठी प्रतिप्ठा का दम्भ भर लें ।

वातावरण कितना ही जहरीला क्यों न हो । विपरीत क्यों न हो । बहुजन हिताय बहुजन सुखाय का भाव रखने वाला उच्च व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति हर परिस्थितियों को सहज पार कर जाता है । वाह्य जीवन की चकाचौध परोपकारी मनुप्य का रास्ता नही रोक सकती । आत्मबल उच्च व्यक्तित्व के बल पर व्यक्ति सामाजिक दुर्बलता का शिकार बचने से बच जाता है । अहंकारी स्वभाव का व्यक्ति समाज के लिये फांस साबित होता है । अहंकारी स्वार्थी और अपनों का भला करने वाले व्यक्ति यदि काल के गाल पर अपना सुनहरे अक्षरों में नाम अंकित करने का ख्वाब पर कभी पूरा नही होता । अभिमानी व्यक्ति समाज के लिये कांट साबित हुआ है । परोपकारी समानता का पुजारी व्यक्ति ही महानता का महारथ हासिल किया है और उसी महानता को ही जगत ने स्वीकार किया है ।